"वमिन कुल्लि शैइन ख़लक़ना ज़ौजैनि लअल्लकुम तज़क्करून"

(अज़्ज़ारियात आयत–49)

काएनात में 'शादी' करने का दस्तूर

(पिछले शुमारे से आगे)

हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

निकाह में मुश्किलें न खड़ी करें

सेक्स एक फूल की तरह ख़िलता है। जब यह खिल जाता है तो उस वक़्त शादी की ज़रूरत आप ही आप (प्रकृतिक रूप से) पैदा हो जाती है। इन्सान की ज़िन्दगी की इस ज़रूरत से कोई इन्कार नहीं कर सकता। शुरु में लड़के–लड़कियों में आने वाले वक़्त और ज़िन्दगी के बारे में कुछ उम्मीदें और कामनाएँ पैदा होती हैं। इस तरह पहले से ही शादी की चाह पैदा होती है। यह एक ऐसी सच्चाई है जो हर आदमी ख़ास कर जवान लड़के–लड़कियों के माँ–बाप के लिए साफ़ और रौशन दिन की तरह बिलकुल खुली हुई होती है।

गुनाह से बचने और समाज को बुराइयों से बचाने का सबसे अच्छा, मज़बूत और ऊँचा रास्ता यही है कि ठीक समय पर लड़के–लड़कियों की शादी करा दी जाए। इससे इन्कार तो कोई जाहिल बेवक़ूफ़ मर्द या नासमझ औरत ही कर सकती है।

इस तरह सबसे पहले माँ–बाप और वह लोग जो शादी ब्याह के मुद्दों जुड़े हुए हों उन सबके लिए ज़रूरी है कि वे ख़ुदा चाहे इस मामले यानी शादी में आसानियाँ पैदा करें और शादी का सीधा–सादा आसान तरीक़ा जुटाएँ। फिर वे लड़के–लड़कियाँ जो शादी करना चाहते हैं अपने होने वाले दुल्हा या दुल्हन से बेकार की उम्मीदें न बाँधें और शादी की कठोर शर्तें न रखें ताकि स्वभाव, सेक्स और ख़ॉहिशें आसानी से पूरी हो जाएँ। इस तरह एक सफल ज़िन्दगी की बुनियाद खड़ी हो जाए और दुनिया व आख़िरत का कल्याण और भलाई मिल जाए।

बेशक जो लोग अपने लड़के–लड़कियों के मसले में ख़ासकर शादी ब्याह के सिलसिलें में आसानियाँ पैदा कर देते हैं उनके लिए ख़ुदा दुनिया और आख़िरत ख़ासकर क़यामत में हिसाब और मीज़ान (आमाल का तराज़ू/कर्मतुला) को आसान कर देगा, जैसा कि क़ुर्आन व रिवायतों से पता चलता है। इसी तरह बुरे मिज़ाज के सख़्त और बात–बात में फ़ी निकालने वाले वे औरत–मर्द जिनकी वजह से लड़के–लड़कियाँ सेक्स की चक्की में पिसकर मान्सिक (Mental) मरीज़ हो जाते हैं और पाक चाल–चलन वाले गुनाहों में पड़ जाते हैं और उनकी आशाएँ और आरज़ुएँ तबाह हो जाती हैं, क़यामत में उन औरतों–मर्दों का हिसाब किताब सख़्त होगा और उन पर ख़ुदा का ग़ज़ब (प्रकोप) होगा और वे उसके अज़ाब की आग में जलेंगे।

शादी–ब्याह के मामले में ज़्यादा छान–बीन करने वाले लोग अन्जाने में कठोर हो जाते हैं जबकि स्वभाव और नेचर से यह काम आसानी से हो जाता है। अगर ज़िन्दगी में शादी का मसला कठिन होता तो यह बेहतरीन सिस्टम इस सूरत में न दिखायी देता जिसमें आज नज़र आता है।

माँ–बाप और लड़के लड़कियों को चाहिए कि इस ख़ुदाई व इन्सानी प्लान से जुड़ी हुई चीज़ों, मेहर, तय करना, मंगनी, सगाई की धूमधाम, निकाह की टीपटाप मफफ़िल, दिखावा, जगमगाहट,

रस्मोरवाज को लेकर सख़्ती से काम न लें और ऐसे प्रोग्रामों से बचें जो दोनों ख़ानदानों की सकत और हैसियत से बाहर हों ताकि शादी आसानी से हो जाये और ख़ुदा तुम्हारे दुनिया व आख़िरत के मसलों को आसान कर दे।

तक़वा वालों (संयमियों) का तरीक़ा अपनाएँ और भलाई, बरकत, शुभ मंगल के इस सोते से फ़ायदा उठायें। अल्लाह वालों के तरीक़े से ज़िन्दगी बितायें क्योंकि दुनिया व आख़िरत की कामयाबी, सौभाग्य, नेकी, ऊँचाई, अच्छाई और इज़्ज़त को अनन्त–अनादि सौन्दर्य के इन्हीं चाहने वालों के रंग में रंग जाने से वजूद मिलता है।

हज़रत अली (अ0) तक़वे वालों की पहचान इस तरह कराते हैं :– ''उनका वजूद गन्दगी से बचा हुआ और पाक है, उनकी ज़रूरतें कम हैं, उनसे हर नेकी, अच्छाई की आस की जाती है और उनकी बुराइयों से (सबकी) बचत है। जिन लोगों का शादी–ब्याह में हाथ होता है उन्हें चाहिए कि उम्मीदें, सकत से ज़्यादा शर्तें लगाने, लालच के गुलाम होने, ग़लत रीति–रवाज पर चलने, ज़िद्दम–ज़िद्दा करने और निकाह की सभी बातों में सख़्ती करने से बचें, शादी के मसले शुरु से ही तक़वे (संयम) की बुनियाद पर तय किये जायें और ख़ुदा की ख़ुशी पाने के लिए भलाई, समझदारी, सलाह, सहूलत और नर्मी अपनायें। शादी के बाद मर्द पर वाजिब है कि जिस लड़की को उसने इस लेहाज़ से देखा, पसन्द किया और उससे निकाह किया है तो उसके साथ ज़िन्दगी बिताये और उस ख़ुदाई रहमत (दया) व मुवद्दत (सच्चा प्यार) का ज़मानतदार और रखवाला बना रहे, जो उन दोनों के बीच हो गयी है। इसी तरह लड़की के लिए ज़रूरी है कि अपने दुल्हा के साथ निबाह करे और हर तरह उसके हक़ और अधिकारों को पूरा करे जिसको उसने मज़हब व शरीयत के लिहाज़ से अपना पति मान लिया है।

यह बात साफ़ हो जाना चाहिए कि ज़्यादा धूमधाम, मेहमानों की बहुतात, तर्क से ख़ाली नासमझी की रस्मों को पालना और शर्तों की भरमार से अधिकारों (Rights) की रखवाली नहीं हो पाती बल्कि यह रखवाली वर चुनने, आसान व सादा प्रोग्राम, इस्लामी आचरण के रख–रखाव और पति–पत्नी के सभी ख़ुदाई व इन्सानी हक़ अधिकारों को पूरा करने से होती है। शादी के बन्धन को बाक़ी रखने के लिए मर्द औरत के एक दूसरे से चाह–प्यार, दोस्ती, मुहब्बत दिखाने से और ज़िन्दगी को जंजाल और परेशानी से बचाये रखने से और उन बातों के बचने से होती है जो मनोवैज्ञानिक (Pscychological) बीमारियों का कारण बनती हैं।

हज़रत अमीरुलमोमिनीन (अ0) और जनाबे फ़तिमा ज़हरा (स0) जैसे मियाँ–बीवी की ज़िन्दगी हर मुसलमान मर्द औरत के लिए बहुत बढ़िया सबक़ है। फ़तिमा (स0) अपने घर वालों ख़ासकर अपने पति के लिए आराम चैन की वजह और घर में आराम के सामान जुटाने वाली हैं और अली (अ0) वर बनने का बड़े ऊँचे नमूना हैं, साथ में बच्चों के लिए चाहने वाले मेहरबान, बड़े अच्छे पालने वाले और घर के कामों में बीवी के बेहतरीन साथ देने वाले हैं। आप आम घरेलू कामों जैसे सफ़ाई, आटा गूँधने, बच्चों की देख–रेख में मदद करते थे। घरेलू कामों में बीवी को मुश्किल में नहीं देख सकते थे और न यह चाहते थे कि घरेलू ज़िन्दगी के सभी काम फ़ातिमा (स0) के ही ज़िम्मे रहें।

एक–दूसरे के हक़ अधिकारों का पास–लिहाज़ करना औरत मर्द दोनों पर वाजिब है। ज़िन्दगी के सभी कामों में एक–दूसरे के साथी बने रहें। और हाँ ज़ुल्म ज़्यादती में साथ न दें। हर वह बेजा काम ज़ुल्म (अन्याय) है जिससे दूसरे का दिल दुखे। ख़ुदा ज़ुल्म–ज़्यादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता है, और किसी पर ज़ुल्म–ज़्यादती को चाहे वह कम ही क्यों न हो पसन्दी करता है।**(जारी)**